यूनेस्को हेरिटेज साइट- मोइदम एवं अहोम साम्राज्य

हालिया संदर्भ :

- हाल ही में पूर्वी असम के 'मोइदम' को यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल में शामिल कर लिया गया है।
- सूची में शामिल होते ही पूर्वोत्तर भारत को इस प्रकार का पहला सांस्कृतिक स्थल प्राप्त हो गया।
- मोइदम के लिए नामांकन डोजियर एक दशक पूर्व ही यूनेस्कों को भेजा गया था।
- भारत पहली बार यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति की बैठक की मेजबानी कर रहा है।
- यूनेस्कों की विश्व धरोहर समिति की 46वें सत्र का आयोजन नई दिल्ली में किया जा रहा है।
- मोइदम को शामिल किए जाने के बाद केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय ने यूनेस्को को मोइदम के सार्वजनिक सांस्कृतिक मूल्य को समझने के लिए धन्यवाद दिया है।

मोइदम :

- असम के चराईदेव जिले में अहोम साम्राज्य के शाही सदस्यों के लिए बनी कब्रगाह है, जिसका संबंध 13वीं-19वीं शताब्दी से है।
- यूनेस्को में शामिल मोइदम 700 वर्ष पुराना है।
- मोइदम का निर्माण मुख्यतः मिट्टी, ईंटें एवं पत्थर से किया गया है।
- मोइदम की बाहरी संरचना सामान्यतः मिट्टी के टीले होते है, जो बाहर से पत्थर एवं ईंटे की दीवारों से ढँके होते है।
- शुरूआती दौर में इसमें अहोम साम्राज्य के शाही वंशजों के पार्थिव शरीर को दफनाया जाता था लेकिन जब से अहोम शासकों ने शव-दाह की पद्धति अपनाई (11वीं शताब्दी) तब से दाह-संस्कार के बाद हड्डियों एवं राख के अवशेष को मोइदम में दफनाया जाता था।
- मोइदम की तुलना चीन के प्राचीन शाही मकबरों एवं मिस्त्र में फिरॉन के पिरामिडों से की जा सकती है।
- यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल में शामिल मोइदम में विभिन्न आकारों के 90 संरचना प्राप्त हुए है।
- यूनेस्को की वेबसाइट के अनुसार, 600 वर्षों तक ताई-अहोम ने पहाडियों एवं जंगलों में प्राकृतिक स्थलाकृति को उभारते हुए मोइदम का निर्माण किया।

- यूनेस्कों द्वारा शामिल किए गए मोइदम अहोम राजघराने से संबंधित है, जबकि अन्य अभिजात वर्ग एवं प्रमुखों के मोइदम प्रकार के कब्र असम के पूर्वी भाग में जोरहट एवं डिब्रूगढ के बीच फैले हुए है।
- मोइदम की ऊँचाई सामान्यतः अंदर दफनाने जाने वाले व्यक्ति के लंबाई पर निर्भर करता था। हालांकि यह दफनाए जाने वाले व्यक्ति का साम्राज्य में वर्चस्व एवं प्रतिष्ठा को भी प्रतिबंधित करता था।
- गजाधर सिंह एवं रूद्र सिंह को छोडकर बाकी अन्य मोइदम अज्ञात व्यक्तियों के है।
- मोइदम के अंदर, मृत राजाओं के साथ-साथ उसके नौकरों, घोडों, मवेशियों एवं कभी-कभी उनकी पत्नियों को भी दफनाया जाता था।
- ये मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास रखते थे और इनका मानना था कि व्यक्ति को मृत्यु के बाद उक्त चीजों की आवश्यकता होगी।
- अहोम साम्राज्य की अंत्येष्टि क्रिया प्राचीन मिस्त्रवासियों के समान थी, जिसके कारण चराईदेव में पाए जाने वाले मोइदम को असम का पिरामिड भी कहा जाता है।
- अहोमों की अंत्येष्टि संस्कार ताई लोगों से उत्पन्न हुईथी।

अहोम :

- अहोम या ताई-अहोम भारत के पूर्वोत्तर राज्यों असम एवं अरूणाचल प्रदेश का जातीय समूह है।
- इस समुदाय के सदस्य ताई-लोगों के मिश्रित वंशज है, जो 13वीं सदी के पूर्वार्द्ध में असम के ब्रह्मपुत्र नदी धारी में आकर बस बए और स्थानीय स्वदेशी लोगों के साथ जुडकर इतिहार का हिस्सा बन गए।
- अहोम राजवंश की स्थापना सुकफा या त्सु-का-फा ने 1228 ईस्वी में की थी, जो मोंग माओ के एक राजकुमार थे।

- अहोम राजवंश को विदेशी मध्ययुगीन इतिहार में असम के राजकुमारों/राजाओं के रूप में वर्जित किया जाता है, लेकिन उनके अपने विषयों में उन्हें चाओफा या स्वर्गदेव के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।
- छोलुंग सुकफा को अहोम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है, जिसने 1253 में इस वंश की स्थापना की।
- चराईदेव, जो गुवाहाटी से 400 km पूर्व में स्थित है, अहोम साम्राज्य की प्राचीन राजधानी थी।
- 16वीं शताब्दी में सुहंगमुंग के अधीन इस साम्राज्य का विस्तार हुआ लेकिन मोआमोरिया विद्रोह के बाद साम्राज्य की शक्ति क्षीण होने लगी।
- साम्राज्य को बाद में बर्मी सैनिकों का आक्रमण भी कई बार झेलना पडा।
- इस वंश/साम्राज्य ने लगभग 600 वर्षों तक शासन किया, जो 1826 में प्रथम आंग्ल-वर्षा युद्ध के बाद यांडबु की संधि से समाप्त हुआ।
- इस संधि के साथ क्षेत्र पर ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार हो गया।

अहोमों की राजनीतिक व्यवस्था :

- अहोमों ने जमींदारों, जिन्हें भुइयाँ कहा जाता था कि पुरानी व्यवस्था को खत्म कर नए साम्राज्य को विकसित किया।
- जमींदारी व्यवस्था बलात श्रम पर निर्भर था और इस प्रकार के बलात श्रम करने वालों को पाइक कहा जाता था।

सामाजिक व्यवस्था :

- साम्राज्य खेलों या कुलों में विभाजित था, जिसमें प्रत्येक कुल के अंतर्गत कई गाँव आते थे।
- साम्राज्य के लोग मुख्यतः आदिवासी देवताओं की पूजा करते थे।
- बाद में अहोम साम्राज्य ने हिन्दू धर्म को अपना लिया, हालांकि उन्होंने इसके बाद भी अपने पारंपरिक मान्यताओं को सहेजे रखा।

सैन्य-वीरता :

- अहोम साम्राज्य की सेना साहसी योद्धाओं से सजी हुई थी, जिसमें पैदल सेना, नौसेना, हाथी-सवार, घुडसवार, तोपखाने एवं गुप्तचर शामिल थे।
- अहोम सैनिक तीर-धनुष, भाले, तलवार एवं तोप सहित अन्य आग्नेपास्त्रों से लैस थे।
- ये गुरिल्ला युद्ध-पद्धति में भी माहिर थे।

लचित बोरफुकन :

Result Mitra TM

- बोरफुकन की नेतृत्व में अहोम सेना ने 1671 में औरंगजेब की मुगल सेना को, जो राम सिंह-2 के नेतृत्व में युद्ध करने आया था, हटाया था।
- यह युद्ध सराईघाट के युद्ध से प्रसिद्ध हुआ, जो ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर लडा गया था।
- राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के द्वारा अपने सर्वश्रेष्ठ कैडेर को लचित बोरफुकन स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता है, जो वर्ष 1999 से दिया जा रहा है।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा असम के जोरहट में लचित बोरफुकन डी 125 फीट ऊँची प्रतिमा का अनावरण किया गया।
- यह एक कांस्य प्रतिमा है, जिसे "वीरता का प्रतिमा" नाम दिया गया है।
- रामजी सुतार द्वारा निर्मित इस प्रतिमा का आधार 41 फीट है, जबकि लचित की प्रतिमा 84 फीट है।

विश्व विरासत स्थल :

- विश्व विरासत स्थल का तात्पर्य ऐसे स्थल से है, जिन्हें UNESCO द्वारा उसके विशिष्ट महत्व के कारण सूचीबद्ध किया गया है।
- इस सूची को UNESCO द्वारा 1997 में अपनाया गया।
- इसका संबंध "विश्व सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण में संबंधित अभिसमय" नामक अंतर्राष्ट्रीय संधि से है।
- वर्तमान में विश्व भर में 168 देशों में 1202 ऐसे स्थल है।
- सर्वाधिक ऐसे स्थल इटली (59) में है, जिसके बाद चीन, फ्रांस एवं जर्मनी का स्थान आता है।

भारत :

- भारत में अब तक 43 ऐसे स्थल हो गए है।
- इनमें से 35 सांस्कृतिक , 7 प्राकृतिक एवं 1 मिश्रित स्थल है।
- कोलकाता का शांति-निकेतन 41वां, होयसल का पवित्र मंदिर 42 वां तथा मोइदम 43वां ऐसा स्थल है।
- हडप्पा सभ्यता के धौलावीरा को 40वें विश्व विरासत स्थल के रूप में शामिल किया गया था।
- भारत का पहला ऐसा स्थल 'आगरा का किला' है।

अहोम विद्रोह :

- आंग्ल-बर्मा युद्ध के बाद यांडबू संधि के अनुसार ब्रिटिश को क्षेत्र छोडकर जाना था, लेकिन चाय की खेती एवं अन्य सामरिक लाभ को देखते हुए यहीं रह गए।

Result Mitra TM

- फलतः वर्ष 1828 में अहोम राजकुमार गोमधर कुँवर एवं धनंजय बोरगोहेन ने अहोम विद्रोह की शुरूआत की।
- कुछ समय के बाद ही अंग्रेजों द्वारा विद्रोह को दबा दिया गया एवं सभी मुख्य विद्रोहियों को गिरफ्तार कर फांसी की सजा सुनाई गई, लेकिन बाद में उनकी सजाओं को कम कर दिया गया।

TM
Result Mitra